शिक्षा निदेशालय

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली

मूल्य परक प्रश्न पर आधारित अतिरिक्त सहायक सामग्री

वर्ष 2012–2013

विषय – सामाजिक विज्ञान

कक्षा – दसवीं

मार्गदर्शन :

डॉ0 सुनीता एस0 कौशिक

अतिरिक्त शिक्षा निदेशक (स्कूल/परीक्षा)

समन्वय :

महावीर सिंह कुहद

प्रधानाचार्य

राज. वरि. माध्य. बाल विद्यालय, पीतमपुरा दिल्ली

तैयारकर्ता :

क्र. सं.	नाम	विद्यालय	पद
1.	नरेश कुमार बन्सल	राज. वरि. मा. बाल विद्यालय एस यू ब्लाक पीतमपुरा	टी जी टी सामाजिक वि.
2.	आलोक कुमार बन्सल	राज. वरि. मा. बाल विद्यालय एस यू ब्लाक पीतमपुरा	टी जी टी सामाजिक वि.
3.	बिजेन्द्र सिंह	राज. वरि. मा. बाल विद्यालय, नं. 2 शकूरपुर	टी जी टी सामाजिक वि.
4.	सुधा शर्मा	सर्वोदय विद्यालय, कैलाश एन्क्लेव पीतमपुरा	टी जी टी सामाजिक वि.
5.	सन्तोष कुमारी गुप्ता	राज. सहशिक्षा व. मा. विद्यालय सैक्टर–2 रोहिणी	टी जी टी सामाजिक वि.

मूल्यपरक शिक्षा

मूल्य शब्द अर्थशास्त्र का है। किसी वस्तु का मूल्य या कीमत उसकी उपयोगिता से तय होता है। मूल्य की अवधारणा को वस्तुओं पर लागू करने के स्थान पर व्यक्ति अथवा समाज पर लागू करने पर इसका अर्थ व्यापक हो जाता है इस संदर्भ में व्यक्ति के समग्र व्यक्तित्व का आंकलन करते हुए सामाजिक सदस्य के रूप में उसके गुणों को दृष्टि में रखना होता है, शारीरिक बनावट, कद–काठी, रंग, नस्ल, अथवा वेशभूषा इसका आधार नहीं बनती। इसकी अपेक्षा विविध विषयों पर उसकी समझ और वृहद् मानव समुदाय के सभ्य, संवेदनशील, जागरूक, बुद्धिमान नागरिक के रूप में उसके गुणों का मूल्यांकन किया जाता है।

शिक्षा का आधुनिक सभ्यता के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है विद्यालयी स्तर पर विभिन्न विषयों को जान–सीख कर विद्यार्थी बेहतर नागरिक बनता है, जिसका सोचने–समझने का तरीका वैज्ञानिक एवं तर्कसंगत हो, विभिन्न क्षेत्रों की खोजों को समाहित करके उसे आधुनिक विश्व के मानकों के अनुकूल ढाला जाता है।

इन विषयों के अन्तर्गत दिये जाने वाले ज्ञान एवं सूचना के आधार पर ही विद्यार्थी की जांच या मूल्यांकन किया जाता है। इन ज्ञान व सूचनाओं की आधिकारिक जानकारी के मूल्यांकन का आधार होती है– लिखित परिक्षाएं और इन परिक्षाओं में अधिकतम अंक प्राप्त करने की स्पर्धा ने इस 'ज्ञान' को यांत्रिक बना दिया है। सीखे गए इस ज्ञान का लिखित परीक्षा केन्द्रित होना उसे निर्जीव, अनुपयोगी एवं दिखावे की वस्तु बना देता है।

विभिन्न विषयों को सीखते व समझते हुए उसे मूल्योन्मुखी बनाना आज की महत्वपूर्ण आवश्यकता बन गयी है। विद्यालय के स्तर पर अध्ययन किए जाने वाले विषयों को यांत्रिक रूप से रटने के स्थान पर उससे निकलने वाले व्यवहारिक निष्कर्षों को ग्रहण करके उसे जीवन व्यवहार और आचरण में ढालने की सख्त ज़रूरत है। किसी भी विषय का ज्ञान यदि हमारे व्यवहार को मानव मूल्यपरक आयाम और हमारे आचरण को इंसानी रूप न दे सके तो वह ज्ञान एकांगी, यांत्रिक, अमूर्त एंव अव्यवहारिक बना रहेगा। कोई विद्यार्थी किसी विषय को रटने में महारत हासिल करके स्वयं को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध कर अपना रोब जमा सकता है। इसी ज्ञान और सूचना के आधार पर वह विभिन्न प्रतियोगी परिक्षाओं में अपना सिक्का जमा कर उच्च पदों को पा जाता है। जबकि मूल्य आधारित ज्ञान के बिना काई भी विद्यार्थी बेहतर इंसान सभ्य नागरिक समाज का जिम्मेवार नहीं हो सकता। विभिन्न विषयों की विषयवस्तु मानव मूल्य के मद्देनज़र ग्रहण किए बिना वह ज्ञान एकांगी होगा। विभिन्न विषयों के आधार पर मूल्य आधारित प्रश्न–माला बनाने के पीछे हमारा उद्देश्य रटने के लिए आदर्श सामग्री मुहैया कराना नहीं अपितु बेहतर इंसान बनने की दिशा में विभिन्न विषयों का मूल्य आधारित अध्ययन करके आवश्यक दिशा निर्देश निर्धारित करना है। आशा है विद्यार्थी इन्हें रटने की विषय–वस्तु न बनाकर इन्हें व्यवहारिक, उपयोगी व मानवीय क्रियाकलाप के रूप में करेंगे। इस प्रकार वे अपने परिवार या संस्थान, ग्राम या मोहल्ला, जिला या जनपद, प्रांत या राष्ट्रीयता के साथ–साथ श्रेष्ठतर विश्व नागरिक बनने की ओर अग्रसर होंगे।

महाबीर सिहँ कुहाद
प्रधानाचार्य
राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय
एस यू – ब्लॉक, पीतमपुरा, दिल्ली–34
ग्रुप लीडर – मूल्यपरक प्रश्न
कक्षा – दसवीं
विषय – सामाजिक ज्ञान

इतिहास

प्रश्न

अध्याय – 1

यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय

प्रश्न (1) फ़्रांसीसी क्रांतिकारियों द्वारा सामूहिक पहचान की भावना पैदा करने के लिए उठाए गए कदम पूर्ववर्ती समाज में लोगों की पहचान से किस आधार पर अलग थे?

मूल्य – सामूहिक सद्भावना और एकता।

प्रश्न (2) नेपोलियन संहिता – 1804 में कही गई बातें किस प्रकार उदारवादी राष्ट्रवाद की विचारधारा के अनुरूप थीं? स्पष्ट कीजिए।

मूल्य – चिंतनपूर्ण समझ।

प्रश्न (3) आपके विचार में रूढ़िवादी विचारधारा किस प्रकार मानव जीवन के उत्थान में बाधक है?

मूल्य – तार्किक सोच।

प्रश्न (4) क्रांतिकारी विचारधारा ने किस प्रकार निरंकुश राजतंत्र के विरूद्ध आधुनिक राष्ट्रराज्य की स्थापना में योगदान दिया? मेत्सिनी का उदाहरण देते हुए इसे समझाइए।

मूल्य – आधुनिक समझ।

प्रश्न (5) भूख, कठिनाई, असमानता और बेरोज़गारी किस प्रकार जनविद्रोह का कारण बन सकती है? 1830 के दशक में यूरोपीय परिस्थितियों के संदर्भ में अपने विचार प्रकट कीजिए।

मूल्य – सामाजिक संवेदनषीलता।

प्रश्न (6) आपके विचार में ब्रिटेन में राष्ट्र–राज्य का निर्माण यूरोप के बाकी देशों की अपेक्षा किस तरह भिन्न था?

मूल्य – चिंतन।

प्रश्न (7) आपके विचार में जर्मनी और फ़्रांस में राष्ट्र को दर्शाने वाले प्रतीक किस प्रकार वहाँ के लोगों की भावनाओं को प्रकट करते थे?

मूल्य – राष्ट्रवाद की लोकतांत्रिक समझ।

प्रश्न (8) 'राष्ट्रवाद ने ही साम्राज्यवाद को जन्म दिया और अन्ततः उसका अंत भी किया' उदाहरण सहित समझाइए।

मूल्य – आलोचनात्मक सोच।

अध्याय – 2
इंडो–चाइना में राष्ट्रवादी आन्दोलन

प्रश्न 9) औपनिवेशिक वर्चस्व और उसके खिलाफ़ उत्पन्न प्रतिरोध के फलस्वरूप कई देशों में राष्ट्रवाद का उदय हुआ वियतनाम का उदाहरण देकर अपने विचार प्रकट कीजिए।

मूल्य – स्वतंत्रता व राष्ट्रवाद।

प्रश्न 10) किसी भी देश को उपनिवेश बनाने की आवश्यकता क्यों पड़ी। फ्रांस का उदाहरण देकर अपने विचार दीजिए।

मूल्य – यथार्थवाद।

प्रश्न 11) 'उपनिवेशों का विकास करना साम्राज्यवादी देशों की मज़बूरी थी' स्पष्ट कीजिए।

मूल्य – नियंत्रण की समझ।

प्रश्न 12) औपनिवेशिक देशों में साम्राज्यवादी देशों द्वारा किए गए शिक्षा के प्रसार ने दोहरी भूमिका निभाई। अपने विचार वियतनाम के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

मूल्य – चुनौतीपूर्ण स्थिति का सामना।

प्रश्न 13) सीमित संसाधनों वाला एक छोटा राष्ट्र अपनी सूझ–बूझ से महाशक्ति को भी झुका सकता है। वियतनाम अमेरिकी युद्ध का उदाहरण देकर समझाओं।

मूल्य – रचनात्मकता।

अध्याय – 3
भारत में राष्ट्रवाद

प्रश्न 14) ''सत्याग्रह का विचार आज भी प्रासंगिक है।'' इस पर अपनी राय दीजिए।

मूल्य – अहिंसा व लोकतंत्र।

प्रश्न 15) 'जलियावाला बाग हत्याकाण्ड ने ब्रिटिश शासन की नैतिकता को ध्वस्त कर दिया।' स्पष्ट कीजिए।

मूल्य – बौद्धिक व निरंकुषता विरोधी।

प्रश्न 16) खिलाफ़त आन्दोलन को समर्थन देकर गाँधी ने किस प्रकार की दूरदर्शिता का परिचय दिया।

मूल्य – सामाजिक – धार्मिक सद्भाव।

प्रश्न 17) सविनय अवज्ञा आन्दोलन की सीमाएँ वास्तव में राष्ट्रीय आन्दोलन की असफलता को प्रकट करती थी? समझाइए।

मूल्य – तार्किक सोच। परिणाम मुखी।

प्रश्न 18) जनता द्वारा किया गया असहयोग किस प्रकार साम्राज्यवादी शक्तियों की परेशानी का कारण बन जाती है। गाँधी जी द्वारा चलाए गए असहयोग आन्दोलन के संदर्भ में अपने विचार प्रकट कीजिए।

मूल्य – एकता।

प्रश्न 19) आज के समय में गाँधी जी की विचारधारा का मूल्यांकन कीजिए।

मूल्य – अहिंसा, सहिष्णुता व समझ।

प्रश्न 20) सामूहिक अपनेपन की भावना को पैदा करने के लिए जिन प्रतिकों, छवियों का सहारा लिया गया उनकी क्या सीमाएं थी?

मूल्य – रचनात्मकता व आलोचनात्मकता।

भूगोल

अध्याय – 5

खनिज तथा उर्जा संसाधन

प्रश्न (21) मनुष्य के विकास की सभी अवस्थाओं में खनिजों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। स्पष्ट कीजिए।

मूल्य – सतत विकास।

प्रश्न (22) लौह खनिज आधुनिक औद्योगिक विकास की रीढ़ क्यों हैं? स्पष्ट करो।

मूल्य – सहयोग व मज़बूती।

प्रश्न (23) खनिजों का संरक्षण स्वयं मानव जीवन के अस्तित्व के लिए आवश्यक है। कैसे?

मूल्य – मितव्ययिता।

प्रश्न (24) नवीकरणीय ऊर्जा संसाधन ही अच्छे भविष्य का बेहतर विकल्प है। इस कथन के पक्ष में अपने विचार प्रकट कीजिए।

मूल्य – पर्यावरण के प्रति जागरूकता।

प्रश्न (25) "ऊर्जा की बचत ही ऊर्जा उत्पादन है।" इस कथन के समर्थन में तर्क दो।

मूल्य – मितव्ययिता,बचत,सरलता।

प्रश्न (26) जल का संरक्षण ऊर्जा की बढ़ती माँग को पूरा करने के लिए भी आवश्यक है। इस संदर्भ में अपने विचार प्रकट कीजिए।

मूल्य – प्रतिबद्धता व प्रभाविता।

अध्याय –6

विनिर्माण उद्योग

प्रश्न 27) कृषि और उद्योगों का साथ–साथ चलना किसी भी देश के विकास में किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है?

मूल्य – सहयोगपूर्ण प्रवृत्ति।

प्रश्न 28) उद्योगों की स्थापना में प्रमुख सहायता कारकों पर प्रकाश डालते हुए देश की अर्थव्यवस्था को मज़बूत बनाने में उद्योगों की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

मूल्य – दूरदर्षिता।

प्रश्न 29) आपके विचार में महाराष्ट्र और गुजरात में ऐसी कौन–सी अनुकूल परिस्थितियां हैं, जिसके कारण प्रारम्भिक वर्षों में अधिकांश सूती वस्त्र मिले वहीं पर स्थापित हुई। वर्णन कीजिए।

मूल्य – सहसंबंध स्थापना।

प्रश्न 30) भारत के लिये रसायन उद्योग बहुत महत्वपूर्ण क्यों है। इस कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

मूल्य – संसाधनपूर्णता।

प्रश्न 31) देश में उद्योगों के असमान विकास का आपकी दृष्टि में क्या कारण है? स्पष्ट कीजिए।

मूल्य – आलोचनात्मक चिंतन।

प्रश्न 32) इलैक्ट्रोनिक उद्योग ने भारत के आम लोगों के जीवन और देश की अर्थव्यवस्था में क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिया है। क्या आप इस कथन से सहमत हैं अपने विचार व्यक्त कीजिए।

मूल्य – समझ अथवा बोधात्मकता।

प्रश्न 33) क्या आप इस कथन से सहमत है कि कुटीर उद्योग भी भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है कुटीर उद्योगों की उपयोगिता पर, अपने विचार व्यक्त कीजिए।

मूल्य – समूहकार्य, उपयोगिता।

अध्याय –7
राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की जीवन रेखाए

प्रश्न 34) परिवहन के साधन राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की जीवन रेखाएं क्यों माने जाते हैं?
मूल्य – भूमिका उन्मुखी।

प्रश्न 35) सीमान्त सड़कों की उन्नत अवस्था राष्ट्रीय विकास और सुरक्षा हेतु ज़रूरी है। कैसे?

मूल्य – समावेषन।

प्रश्न 36) संचार सेवाएं क्या होती हैं? इनका मानव जीवन के विकास में क्या योगदान है।

मूल्य – प्रभावपूर्णता।

प्रश्न 37) पर्यटन के विकास ने मानव समाज को किस तरह लाभ पहुंचाया है?

मूल्य – चिंतन।

प्रश्न 38) आधुनिक समय में रेल परिवहन राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में परिवहन के अन्य साधनों की अपेक्षा प्रमुख क्यों हो गया है?

मूल्य – अद्वितियता।

प्रश्न 39) पाइपलाइन परिवहन की प्रमुख समस्याएं या सीमाएं क्या हैं?

मूल्य – उपयोगिता व अवधान।

प्रश्न 40) आपकी दृष्टि में भारत में वायु परिवहन के विकास ने किस प्रकार सकारात्मक भूमिका निभाई है।
मूल्य – योग्यता, उत्तम होना।

राजनीति – विज्ञान

अध्याय – 5
जनसंघर्ष और आंदोलन

प्रश्न 41) नेपाल के जन आंदोलन में किस प्रकार के मूल्यों का योगदान रहा?

मूल्य – सामूहिकपन, संघर्ष की चेतना।

प्रश्न 42) प्रजातंत्र के संचालन में दबाव समूहों के क्रियाकलाप किन तीन प्रकार से सहायक हैं?

मूल्य – लोकतंत्रात्मक प्रक्रियाओं की समझ।

प्रश्न 43) 'लोकतंत्र की जीवन्तता से जनसंघर्ष का अन्दरूनी संबंध है' इस कथन पर अपने विचार दीजिए।

मूल्य – रचनात्मकता, समझ।

प्रश्न 44) कुछ समकालीन आन्दोलनों के उदाहरणों द्वारा समझाएँ कि इनमें उठाए गए मुद्धे किस प्रकार हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं?

मूल्य – जागरूकता।

प्रश्न 45) 'जनहित समूहों की गतिविधियाँ जनता के हितों की पहरेदार के समान होती हैं।' इस कथन को स्पष्ट करो।

मूल्य – आभारपूर्णता, समूह कार्य।

प्रश्न 46) लोकप्रिय संघर्ष लोकतंत्र को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका कैसे निभाते है?

मूल्य – उपयोगिता व समझ।

अध्याय – 6
राजनीतिक दल

प्रश्न 47) राजनैतिक दलों को कौन–कौन सी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है?

मूल्य – चुनौतियों की समझ।

प्रश्न 48) आधुनिक लोकतंत्र राजनीतिक दलों के बिना क्यों नहीं चल सकता?

मूल्य – व्यवस्था की समझ।

प्रश्न 49) भारत में बहुदलीय व्यवस्था के उदय होने के पीछे कौन–सी परिस्थितियां हैं? इस व्यवस्था के कोई दो लाभ बताओ?

मूल्य – योगदान, परिस्थितियों की समझ।

प्रश्न 50) 'क्षेत्रीय दलों ने भारतीय लोकतंत्र और संघवाद को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।' इस कथन के पक्ष में तर्क दीजिए।

मूल्य – विकेन्द्रीकरण व विभिन्नता की उपयोगिता।

प्रश्न 51) एक जागरूक नागरिक के रूप में एक राजनैतिक दल को मत देते समय उसके किन गुणों को आप महत्व देंगे?

मूल्य – अच्छे नागरिक के गुण।

प्रश्न 52) राजनीतिक दलों में सुधार स्वयं लोकतंत्र की सफलता के लिए आवश्यक है। क्यों?

मूल्य – सतत सुधार, सोच आधारित।

अध्याय – 7
लोकतंत्र के परिणाम

प्रश्न 53) स्वस्थ समाज के निर्माण में लोकतंत्र की प्रक्रिया किस प्रकार सहायक सिद्ध हो सकती है?
मूल्य – समर्थन आधारित, स्थिरता।

प्रश्न 54) तानाशाही की अपेक्षा लोकतंत्रीय सरकारों को समाज अच्छी दृष्टि से क्यों देखता है?
मूल्य – अंतर करने की योग्यता।

प्रश्न 55) लोकतंत्र नागरिकों की गरिमा और आज़ादी को कायम रखने में किस प्रकार सफल हुआ है?
मूल्य – न्याय व आज़ादी।

प्रश्न 56) लोकतंत्र ने नागरिकों के जीवन में प्रेम और सद्भाव की व्यवस्था किस प्रकार कायम की है?
मूल्य – सद्भाव।

प्रश्न 57) लोकतंत्र में असमानता और गरीबी को कैसे कम किया जा सकता है?
मूल्य – समता।

प्रश्न 58) भारतीय लोकतंत्र को मज़बूत बनाने के लिए सुझाव दीजिए।
मूल्य – तार्किक व समझ आधारित सोच।

प्रश्न 59) लोकतंत्र मानव की गरिमा और स्वतंत्रता में वृद्धि करने का कार्य करता है। भारत के उदाहरण से समझाइए।
मूल्य – लोकतंत्रात्मक प्रक्रियाओं की समझ।

प्रश्न 60) स्वस्थ समाज के निर्माण में लोकतांत्रिक प्रक्रिया किस प्रकार सहायक सिद्ध हो सकती है?
मूल्य – लोकतंत्रात्मक प्रक्रियाओं की समझ।

अध्याय – 8
लोकतंत्र की चुनौतियाँ

प्रश्न 61) आपके विचार से लोकतंत्रात्मक सरकार में चुनौतियाँ क्यों पैदा होती हैं? स्पष्ट करिए।

मूल्य – समझ आधरित, चुनौतियों का सामना करना।

प्रश्न 62) आधुनिक समय में लोकतंत्रीय समाज में राजनीतिक सुधारों की आवश्याकताओं पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

मूल्य – सत्यवादिता, उपयोगिता व जागरूकता।

प्रश्न 63) लोकतांत्रिक व्यवस्था में शासन की शक्ति लोगों के हाथों में होती है फिर लोकतंत्र को चुनौतियों का सामना क्यों करना पड़ता है?

मूल्य – समस्या निदान।

प्रश्न 64) आपके विचार में लोकतंत्र को मज़बूत बनाने में जनता की भागीदारी का कितना योगदान हो सकता है?

मूल्य – भागीदारी, समूह कार्य।

प्रश्न 65) स्थानीय सरकारें अभी भी प्रभावी तरीके से कार्य नहीं कर पा रही हैं। यह लोकतंत्र की कौन–सी चुनौती है? इसे कैसे दूर किया जाए?

मूल्य – गतिषीलता, समस्या पहचान व सूझ–बूझ ।

अर्थशास्त्र

अध्याय – 3
मुद्रा और साख

प्रश्न 66) अनौपचारिक क्षेत्रों से ऋण लेने वाले समूहों में अधिकतर ग्रामीण, अशिक्षित और गरीब ही क्यों होते हैं? यह किस प्रकार उनके शोषण को बढ़ावा देते है?

मूल्य – सामाजिक सदभावना, संवेदनषीलता।

प्रश्न 67) आवश्यकताओं का दोहरा संयोग वास्तव में एक समस्या होने के साथ–साथ मानव समाज के विकास की निम्न अवस्था को भी दर्शाती है। कैसे?

मूल्य – विकास की समझ।

प्रश्न 68) अतिरिक्त राशि वाले लोगों (जमाकर्त्ता) और जिन्हें राशि की जरूरत है (कर्जदार) दोनों के बीच मध्यस्थता करके बैंक किस प्रकार एक सकारात्मक भूमिका निभाते हैं?

मूल्य – सहयोग आधारित उद्यम ।

प्रश्न 69) कर्ज के जाल में फंस जाने की स्थिति का एक काल्पनिक उदाहरण दें। यह बताएं कि ज्यादातर अनिश्चित आय वर्ग के लोग ही क्यों उसमें फंसते हैं।

मूल्य – रचनात्मकता व कल्पनाषीलता।

प्रश्न 70) स्वयं सहायता समूह गरीबों के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन किस प्रकार ला सकते हैं।

मूल्य – स्व सहायता, नेतृत्व।

प्रश्न 71) किसी व्यक्ति को एक छोटा व्यवसाय करने के लिए ऋण की ज़रूरत है, वह किस आधार पर यह निश्चित करेगा कि उसे यह ऋण बैक से लेना चाहिए या साहूकार से?

मूल्य – सूक्ष्म विष्लेषण व शोध।

प्रश्न 72) चैक द्वारा भुगतान नकद भुगतान की अपेक्षा किस तरह से एक बेहतर विकल्प है?

मूल्य – उपयोगिता व अद्वितियता।

प्रश्न 73) जनता द्वारा प्राप्त जमाओं का बैंक क्या करते हैं तीन बिन्दु लिखिए?

मूल्य – बौद्धिकता।

अध्याय – 4

वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था

प्रश्न 74) पिछले कुछ वर्षों में बाज़ार में आए परिवर्तनों पर टिप्पणी कीजिए?

मूल्य – परिवर्तन की समझ।

प्रश्न 75) विश्व व्यापार संगठन की नीतियां किस प्रकार विकसित देशों के पक्ष में और विकासशील देशों के प्रति अन्यायपूर्ण हैं?

मूल्य – अन्याय की पहचान, नियंत्रण।

प्रश्न 76) 'वैश्वीकरण सभी के लिए लाभप्रद नहीं रहा है।' न्यायसंगत वैश्वीकरण के लिए क्या कदम उठाए जा सकते है?

मूल्य – असमानता की जाँच, सूझ–बूझ।

प्रश्न 77) वैश्वीकरण के फलस्वरूप बढ़ी प्रतिस्पर्द्धा से भारतीय लोगों को क्या लाभ हुआ है?

मूल्य – प्रतिस्पर्धात्मकता।

प्रश्न 78) विश्व में वैश्वीकरण का प्रभाव एक समान नहीं पड़ा है, क्यों?

मूल्य – रणनीतिक व बोध आधारित।

प्रश्न 79) सरकार वैश्वीकरण को और अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए क्या कदम उठा सकती है?

मूल्य – समझ व आलोचनात्मक चिंतन।

प्रश्न 80) आपके विचार में किन कारकों ने वैश्वीकरण को संभव बनाया है?

मूल्य – तार्किक सोच।

प्रश्न 81) भारत सरकार द्वारा स्वतंत्रता के बाद विदेशी व्यापार और विदेशी निवेश पर प्रतिबंध क्यों लगाया गया था और इस प्रतिबंध को बाद में क्यों हटा दिया गया?

मूल्य – संतुलन, उपयोगिता, परिवर्तन।

प्रश्न 82) भविष्य में वैश्वीकरण जारी रहना चाहिए आपके विचार में आज से बीस वर्ष बाद विश्व कैसा होगा?

मूल्य – कल्पनाषीलता।

अध्याय – 5
उपभोक्ता अधिकार

प्रश्न 83) कोपरा कानून किस तरह उपभोक्ताओं को सशक्त बनाता है?

मूल्य – उपभोक्ता सषक्तिकरण।

प्रश्न 84) विक्रेता उपभोक्ता का शोषण किन–किन तरीकों से करते हैं?

मूल्य – शोषण की समझ।

प्रश्न 85) सूचना के अधिकार ने किस तरह से उपभोक्ताओं के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन किया है?

मूल्य – पारदर्षिता, प्रभावपूर्णता।

प्रश्न 86) अधिकारों की प्राप्ति कर्त्तव्यों के पालन से होती है। एक जागरूक उपभोक्ता के नजरिए से इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

मूल्य – कर्त्तव्य आधारित चिंतन।

प्रश्न 87) शोषित उपभोक्ताओं को न्याय दिलाने में उपभोक्ता अदालतें अपना महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। इस कथन को स्पष्ट कीजिए?

मूल्य – न्याय, व्यवस्था, विधि आदि का महत्व।

उत्तर

इतिहास

अध्याय – 1
यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय

उत्तर 1 :– सामूहिक पहचान की भावना पैदा करने के लिए उठाए गए कदम निम्नलिखित तरीके से अपने पूर्ववर्ती समाज से भिन्न थे –

(1) पहले समाज इस्टेट में बँटी हुई थी जबकि अब पितृभूमि, राष्ट्रीय भाषा, राष्ट्रध्वज आदि के आधार पर सामूहिक पहचान पर बल दिया गया ।

(2) पूर्ववर्ती समाज निरकुंश राजतंत्र के प्रति निष्ठा पर आधारित था जबकि अब यह लोगों द्वारा बने राष्ट्र के प्रति समर्पण पर आधारित था।

(3) समाज में लोगों को संविधान के अंतर्गत समान अधिकार दिए गए जो पहले नहीं थे।

उत्तर 2 :– उदारवाद व्यक्ति की आजादी और कानून के समक्ष समानता का समर्थन करता है। नेपोलियन की संहिता में कही गई बातें कई तरीके से इसे व्यक्त करती थी –

(1) जन्म आधारित विशेषाधिकारों को समाप्त किया गया।

(2) कानून के समक्ष समानता।

(3) संपत्ति का अधिकार।

(4) सामंती व्यवस्था का अंत करके भू–दासत्व और जागीरदारी शुल्कों का अंत।

(5) एक समान कानून, मानक भार और राष्ट्रीय मुद्रा का प्रावधान ।

उत्तर 3 :– रूढ़िवादी विचारधारा निम्नलिखित कारणों से मानव जीवन के उत्थान में बाधक हैं –

(1) यह समाज में परंपरागत ऊँच–नीच की भावना को बनाए रखने का समर्थन करती है।

(2) आधुनिक जीवन मूल्यों के विपरीत है।

(3) समाज में परिवर्तनों का विरोधी।

(4) लोकतंत्र के युग में भी राजतंत्र का समर्थक।

(5) आलोचना और असहमति के खिलाफ़।

उत्तर 4 :– 1815 के बाद के वर्षों में दमन के भय ने उदारवादी–राष्ट्रवादियों को भूमिगत कर दिया। इसलिए कई गुप्त संगठन उभरकर आए जो स्वतंत्रता और मुक्ति के लिए प्रतिबद्ध होकर संघर्ष करने लगे। इटली का ज्युसेपी मेत्सिनी ऐसा ही एक क्रांतिकारी था। उसने दो भूमिगत संगठनों – यंग इटली और यंग यूरोप का गठन किया। उसने इटली को एकीकृत गणतंत्र बनाने के लिए क्रांतिकारी संघर्ष किया। उसके विचारों का पूरे यूरोप पर असर पड़ा तथा रूढ़िवाद को मुहँ की खानी पड़ी।

उत्तर 5 :– 1830 के दशक में यूरोपीय समाज कई कठिनाइयों से जूझ रहा था। बढ़ती आबादी, मशीनीकरण और औद्योगीकरण के कारण प्रतिस्पर्धा में वृधि, महँगाई, व्यापक बेरोज़गारी, शहरों की ओर पलायन, फसलों की बर्बादी आदि ने व्यापक गरीबी का प्रसार किया। 1848 ऐसा ही एक वर्ष था। इन सभी परिस्थितियों की वजह से पेरिस के लोग सड़कों पर उतर आए और राजा को भागने पर मज़बूर कर दिया तथा गणतंत्र की घोषणा कर दी गई । आधुनिक समय में भी इन परिस्थितियों के पैदा होने पर जनता द्वारा विद्रोह की घटनाएं होती रहती हैं। उदाहरण के लिए नेपाल में जनविद्रोह के द्वारा राजतंत्र का खात्मा किया गया।

उत्तर 6 :– ब्रिटेन में राष्ट्रराज्य का निर्माण अचानक हुई कोई उथल–पुथल या क्राँति का परिणाम नहीं था। जैसा कि अन्य यूरोपीय देशों में हुआ। यह एक लंबी चलने वाली प्रक्रिया का नतीजा थी। जिसे हम निम्न तरीके से समझ सकते हैं –

(1) ब्रिटेन कई नृजातीय पहचानों जैसे – अंग्रेज़, वेल्श, स्कॉट आदि का देश था।

(2) आंग्ल राष्ट्र (इंग्लैण्ड) की अहमियत, सत्ता, समृद्धि में वृद्धि के साथ द्वीप समूह के अन्य राष्ट्रों पर इसका प्रभुत्व बढ़ गया।

(3) संसद ने 1688 में राजतंत्र की ताकत छीन ली।

(4) इंग्लैंड और स्कॉटलैंड के बीच 1707 में हुए समझौते से यूनाइटेड किंगडम ऑफ़ ब्रिटेन का जन्म हुआ। किंतु व्यवहार में इंग्लैंड का स्काटलैंड पर प्रभुत्व जम गया।

(5) एक ब्रितानी पहचान के विकास को योजनाबद्ध रूप से बढ़ाया गया जिसमें कई बार स्काटिस, वेल्स, आयरलैंड के लोगों को दबाया भी गया।

उत्तर 7 :– राष्ट्र के प्रति जुड़ाव पैदा करने के लिए 18वीं और 19वीं सदी में राष्ट्र का मानवीकरण किया गया विशेषकर नारीरूपक में दर्शाया जाने लगा।

फ़्रांसीसी क्रांति जो स्वतंत्रता, न्याय और गणतंत्र को प्रकट करती थी उसे कलाकारों ने नारी रूपक के रूप में भी अभिव्यक्त किया। मारीआन की तस्वीर फ़्रांसीसी गणतंत्र को प्रकट करती थी जिसकी लाल टोपी और टूटी ज़ंजीर स्वतंत्रता को दर्शाती थी। आमतौर पर आँखों पर पट्टी बाँधे, तराजू लिए हुए महिला इंसाफ़ को प्रकट करती थी। इन चिन्हों को सार्वजनिक स्थानों पर दर्शाया गया। इसी तरह जर्मनी में जर्मनिया जर्मन राष्ट्र का रूपक बन गई उसके सिर पर बलूत वृक्ष के पत्तों का मुकुट वीरता को प्रकट करता था। इन रूपकों से आम लोग स्वयं को जोड़कर गर्व महसूस करते थे।

उत्तर 8 :– 19वीं सदी में यूरापीय देशों में तीव्र औद्योगिक वृद्धि और उग्रराष्ट्रवादी आकांक्षाओं ने साम्राज्यवाद को जन्म दिया। ब्रिटेन, फ़्रांस, जर्मनी जैसे देशों ने एशिया, अफ़्रीका के कई देशों पर अपना आधिपत्य जमाकर उनका औपनिवेशीकरण किया और अपने हितों के अनुरूप उनका घोर शोषण किया किंतु इस आधिपत्य और शोषण के विरूद्ध इन देशों में साम्राज्य विरोधी आन्दोलन पैदा हुए। इस प्रक्रिया ने यहाँ के लोगों को परस्पर सामूहिक एकता के बंधन में बाँध दिया जो राष्ट्र के रूप में स्वतंत्र राष्ट्रराज्य के निर्माण का स्वप्न संजोने लगी। यद्यपि यह राष्ट्रवाद अपनी परिस्थितियों के अनुरूप भिन्न और विशिष्ट था किंतु इसने यूरोपीय साम्राज्यवाद का अंत कर दिया।

अध्याय – 2
इंडो–चाइना में राष्ट्रवादी आन्दोलन

उत्तर 9 :– औपनिवेशिक नियंत्रण के द्वारा ताकतवर देश अधीन देश का राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक शोषण करता है जिसका लोग विरोध करते हैं और उनमें सामूहिक एकता पैदा होती है। इसका उदाहरण वियतनाम है जहाँ फ्रांस के नियंत्रण ने उनके सांस्कृतिक जीवन को तहस–नहस कर दिया। आर्थिक शोषण और राजनीतिक नियंत्रण ने लोगों के जीवन में कठिनाइयाँ पैदा की जिसका लोगों ने विरोध करते हुए जमकर संघर्ष किया और यहीं से वियतनामी राष्ट्रवाद की नींव पड़ी।

उत्तर 10 :– उपनिवेश बनाने की ज़रूरत के निम्नलिखित कारण थे :–

1) प्राकृतिक संसाधन हासिल करने और जरूरी साजोसामान जुटाने के लिए।

2) पश्चिमी देशों जिसमें फ्रांस भी था कि यह मान्यता कि दुनिया के सभी पिछड़े देशों में सभ्यता की रोशनी पहुँचाना उनका दायित्व है।

3) औद्योगीकरण के कारण अति उत्पादन को बेचने के लिए नए बाज़ारों की खोज।

उत्तर 11 :– उपनिवेशों की स्थापना का मक़सद ही स्वामी राष्ट्र के हितों की पूर्ति थी। किन्तु इसका अधिकांश फायदा तभी हो सकता था जब उपनिवेशों की अर्थव्यवस्था का विकास किया जाए क्योंकि गुलाम देश की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी और जीवन स्तर बेहतर होगा तो वे ज्यादा चीजें खरीदेंगे वियतनाम में फ्रांस द्वारा किए गए प्रगति के उपाय इसी भावना से प्रेरित थे। जैसे – भूमि सुधार, रेलवे–सड़क, बंदरगाह का विकास, फौज और वस्तुओं के आवागमन के लिए संरचनात्मक सुधार किए गए।

उत्तर12– फ्रांसिसियों का दावा था कि वे वियतनाम को आधुनिक सभ्यता से परिचित करा रहे हैं। देशी जनता को सभ्य बनाने के लिए शिक्षा काफी अहम थी। फ्रांसिसियों को शिक्षित कामगारों की ज़रूरत थी किन्तु पढ़ाने–लिखाने से लोग औपनिवेशिक शासन पर सवाल भी उठाने लगे। इसके अलावा अपनी संस्कृति के प्रति जुड़ाव ने परंपरागत शिक्षा व्यवस्था को नुकसान पहुँचाने की फ्रांसीसी किस्म की शिक्षा का विरोध भी किया। अपनी संस्कृति की सुरक्षा की चिंता और आधुनिक मूल्यों के प्रसार ने लोगों को उपनिवेशवाद के खिलाफ खड़ा कर दिया।

उत्तर 13– 1965 से 1972 के बीच अमेरिका ने अपनी अत्याधुनिक सेना की मदद से वियतनाम पर युद्ध थोप दिया। किन्तु वियतनाम ने काफी सूझ–बूझ से इसका मुक़ाबला किया। होची मिन्ह भूलभूलैया मार्ग इसका उदाहरण था। फुटपाथों और सड़कों के विशाल नेटवर्क के जरिए देश

के उत्तरी और दक्षिणी भागों को जोड़ा गया जिससे सैनिक रसद भेजी जाती थी। औरतों ने पीठ पर लादकर माल ढुलाई का कार्य किया। बेहिसाब बमबारी के बावजूद अमेरिका इस सप्लाई लाइन को ध्वस्त नहीं कर पाया। एक छोटे देश की जीवटता यह दर्शाती है कि कमज़ोर देश सूझ–बूझ से महाशक्ति को भी झुका सकती है।

अध्याय – 3
भारत में राष्ट्रवाद

उत्तर 14 – गाँधी जी द्वारा अन्याय व उत्पीड़न के खिलाफ पूर्णतः नवीन मार्ग सत्याग्रह का ईज़ाद किया

गया। इसका अर्थ है सत्य की शक्ति पर आग्रह। असमें अन्याय व उत्पीड़न के खिलाफ शारीरिक बल की जगह अहिंसा की शक्ति और उसके प्रयोग पर बल दिया गया है। यदि सभी लोग निर्भय होकर अहिंसात्मक प्रतिरोध करे तो मेरी नजर में यह कारगर तरीका है। भारत, दक्षिण अफ्रीका, अमेरिका का नागरिक अधिकार आन्दोलन इसका उदाहरण है। यदि इसमें असफता मिलती भी है तो यह रणनीति की कमी और इच्छा शक्ति के अभाव के कारण होता है।

उत्तर 15– 13 अप्रैल 1919 को जलियावाला बाग में निहत्थे लोगों के नरसंहार की घटना ने ब्रिटिश शासन के नैतिक दावों को ध्वस्त कर दिया। जनरल डायर के हथियार बंद सैनिकों के कृत्य ने ब्रिटिश शासन के लोकतांत्रिक मुखौटे को उतार दिया जिसमें निहत्थे लोगों पर गोलीबारी की गई। सभ्यता लोकतंत्र और आधुनिकता के प्रसार का दावा करने वाली ब्रिटिश हुकूमत इस कार्य को लोगों की नज़र में वैध साबित नहीं कर पाई और आम लोगों को अपने खिलाफ कर लिया।

उत्तर 16 – 1) ब्रिटिश शासन के खिलाफ़ लागों के गुस्से को समझकर उसे दिशा देने का कार्य किया।

2) दो बड़े समुदायों हिन्दू और मुस्लिमों के बीच एकता कायम करने के सूनहरे मौके के रूप में

देखा।

3) असहयोग आन्दोलन के रूप में एक बड़े आन्दोलन को जन्म दिया।

उत्तर 17 – सभी सामाजिक समूह गाँधी की स्वराज की अमूर्त धारणा से प्रभावित नहीं थे तथा उन्होंने

सविनय अवज्ञा आन्दोलन में बढ़चढ़ कर हिस्सा नहीं लिया। जो निम्न थे–

1) अछूत वर्ग के अनुसार कांग्रेस रूढ़िवादी हिन्दुओं के दबाव में सामाजिक परिवर्तन के मुद्दे पर ज़्यादा सक्रिय नहीं थी। यद्यपि गाँधी द्वारा अछूतों को हरिजन नाम दिया गया। किन्तु दलित समुदाय अंबेडकर के नेतृत्व में अलग राजनीतिक हल तलाशने में लगा था उसने गाँधी

के आन्दोलन को संशय की दृष्टि से देखा और आन्दोलन में कम हिस्सा लिया।

2) बहुत से मुस्लिम संगठनों ने भी आन्दोलनों में रूचि नहीं दिखाई। असहयोग खिलाफ़त आन्दोलन के शांत पड़ जाने से बहुत से मुस्लिम कांग्रेस से कटा हुआ महसूस करने लगे। हिन्दू मुस्लिम संबंधों में गिरावट आने लगी। प्रथक प्रतिनिधित्व की बात उठाई गई। भावी राष्ट्र में हिन्दू बहुसंख्या के वर्चस्व का भय कांग्रेस मुस्लिमों के मन से दूर नहीं कर पाई। तथा मुस्लिम आन्दोलन से बड़ी संख्या में दूर रहे। यह न केवल आन्दोलनों की विफलता थी अपितु राष्ट्रीय आन्दोलन की बड़ी सीमा थी।

उत्तर 18– गाँधी जी का मानना था कि भारत में ब्रिटिश शासन भारतीयों के सहयोग से ही स्थापित हुआ था और यह इसी सहयोग के कारण ही चल पा रहा है। अगर भारत के लोग अपना सहयोग वापस ले लें तो सालभर में ब्रिटिश शासन ढह जाएगा।
1920 में गाँधी जी द्वारा शुरू किया गया असहयोग आन्दोलन इसे व्यक्त करता था। शहरों में पिकेटिंग, बहिष्कार, धरने , विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई। 1921 से 1922 के बीच कपड़ों के आयात में आधी कमी आ गई। ग्रामीण इलाकों में लगान बंदी और किसान संघर्ष शुरू हुए। इन सबसे ब्रिटिश शासन को भारी नुकसान हुआ और वह दमन पर उतारू हो गई।

उत्तर 19 – 1) आज के लोकतांत्रिक युग में हिंसात्मक तरीकों को ठीक नहीं माना जाता। गाँधी जी अहिंसात्मक तरीकों के समर्थक थे।
2) गाँधी जी की विचारधारा शारीरिक हिंसा की अपेक्षा नैतिक बल पर जोर देती है जो कमज़ोर तबकों, दलितों, महिलाओं के अनुकूल है।
3) गाँधीवादी विचारधारा शोषण के विरूद्ध समानता बंधुत्व, प्रेम पर आधारित है जिसकी आज के समय में ज़रूरत है।
4) गाँधीवादी तरीकों की सफलता पूरी दुनिया में देखी जा सकती है। जैसे – दक्षिण अफ्रीका की आज़ादी।

उत्तर 20 – बहुत सी सांस्कृतिक प्रक्रियाओं के जरिए लोगों में राष्ट्रवाद से जोड़ने के लिए विभिन्न देशों की तरह भारत में भी राष्ट्र की कई छवियों प्रतिकों को गढ़ा गया। बंकिमचन्द्र द्वारा मातृभूमि की वन्दना में लिखा गया वन्देमातरम्, रविन्द्र नाथ द्वारा भारत माता की छवि का चित्रण, राष्ट्रीय ध्वज की रचना, इतिहास की पुनर्व्याख्या आदि इसे प्रकट करती है। लेकिन इन सब कोशिशों की अपनी सीमाएं थी। जिस अतीत का गौरवगान किया जा रहा था वह हिन्दुओं का अतीत था जिन छवियों का सहारा लिया जा रहा था वे हिन्दू प्रतीक थे इसीलिए अन्य समुदायों के लोग अलग–थलग महसूस करने लगे थे।

भूगोल

अध्याय – 5
खनिज तथा उर्जा संसाधन

उत्तर 21 :– मानव समाज निरंतर विकास और परिवर्तन की ओर अग्रसर रहा है। प्रारंभिक मानव जीवन

से लेकर आधुनिक विकसित समाज तक रोज़मर्रा के जीवन में खनिजों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जिसे निम्नलिखित तरीके से समझ सकते हैं :–

(1) परिवहन के साधनों जैसे – सड़कों, रेलवे आदि के निर्माण में खनिजों का योगदान।

(2) त्योहारों, धार्मिक अनुष्ठानों में भी खनिजों का प्रयोग होता रहा है।

(3) जीविका चलाने में भी खनिज कई प्रकार से मदद करते हैं।

(4) रोज़मर्रा की ज़रूरतें भी इनके द्वारा पूरी होती हैं।

उत्तर 22 :– (1) धातु शोधन उद्योगों को मज़बूत आधार प्रदान करते हैं।

(2) औद्योगिक मशीनों और प्रौद्योगिकी का निर्माण इनसे ही होता है।

(3) औद्योगिक उत्पादन की इन पर निर्भरता स्पष्ट है।

उत्तर 23 :– खनिजों के विकास और उपयोग ने मानव जीवन को कई तरीके से लाभ पहुँचाया है। आधुनिक सभ्यता को प्रकट करने वाली बहुमंजिली इमारतें, यातायात के साधन, प्रौद्योगिकी आदि सभी इसकी वजह से ही है। किंतु खनिज निर्माण की भूगार्भिक प्रक्रियाएँ इतनी धीमी हैं कि उनके पुनर्भरण की दर बहुत धीमी है किंतु मानव ने स्वार्थ वश

उसका अत्यधिक एवं अंधाधुंध प्रयोग किया है। सीमित और गैरनवीकरणीय होने के कारण

इसके भंडार खत्म होने वाले हैं किंतु इसके विकल्प अभी सीमित स्तर पर ही उपलब्ध हैं।

अतः खनिज संसाधनों का सुनियोजित एवं सतत पोषणीय ढंग से प्रयोग, पुनःचक्रण, प्रतिस्थापन आदि के रूप में संरक्षण करना मानव जीवन के अस्तित्व के लिए आवश्यक ळें

उत्तर 24 :–ऊर्जा के परंपरागत, जीवाष्मी ईंधन जो गैर नवीकरणीय होते हैं के बढ़ते उपभोग ने न केवल

इनका भंडार सीमित कर दिया है बल्कि प्रदूषण जैसी गंभीर समस्या उत्पन्न कर दी है। इनकी संभाव्य कमी ने भविष्य में ऊर्जा आपूर्ति की सुरक्षा के प्रति चिंता पैदा कर दी है।

अतः नवीकरणीय ऊर्जा संसाधनों जैसे – सौर, पवन, ज्वारीय, जैविक आदि के उपयोग को बढ़ाने की निम्नलिखित कारणों से आवश्यकता है–

(1) इनके भंडार असीमित हैं।

(2) प्रदूषण का स्तर अत्यधिक कम है।

(3) पर्यावरण संरक्षण के अनुकूल है।

उत्तर 25 :– ऊर्जा संरक्षण में वृद्धि और नवीकरणीय ऊर्जा संसाधनों का बढ़ता प्रयोग सतत पोषणीय ऊर्जा के दो आधार हैं। वर्तमान में भारत विश्व के अल्पतम ऊर्जा दक्ष देशों में गिना जाता है। ऊर्जा के सीमित संसाधनों के न्यायसंगत उपयोग के लिए सावधानीपूर्ण तरीका अपनाना होगा। जैसे – एक जागरूक नागरिक के रूप में निजी वाहन की अपेक्षा सार्वजनिक वाहनों का उपयोग करके, बिना ज़रूरत बिजली के यंत्रों का प्रयोग न करके हम अपना योगदान दे सकते हैं। आखिरकार ऊर्जा की बचत ही उत्पादन है।

उत्तर 26 :–जल मानव जीवन के लिए सर्वाधिक आवश्यक है। यह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनिवार्य है।

इसका उपयोग ऊर्जा के क्षेत्र में भी काफी समय से हो रहा है। तेज बहते जल से विद्युत उत्पन्न किया जाता है जो नवीकरणीय ऊर्जा स्त्रोत है। भारत में कई बहुउद्देशीय नदी परियोजनाएँ हैं जो यह कार्य कर रही है।

अध्याय –6

विनिर्माण उद्योग

उत्तर 27 – कृषि और उद्योग एक दूसरे से पृथक नहीं है ये एक दूसरे के पूरक है। उदाहरणार्थ, भारत में कृषि पर आधारित उद्योगों ने कृषि पैदावार बढ़ोत्तरी को प्रोत्साहित किया है। ये उद्योग कच्चे माल के लिए कृषि पर निर्भर हैं तथा इनके द्वारा निर्मित उत्पाद – जैसे सिंचाई के लिए पंप, उर्वरक कीटनाशक दवाएँ, प्लास्टिक पाइप , मशीनें व कृषि औज़ार आदि पर किसान निर्भर है। इसलिए विनिर्माण उद्योग के विकास तथा स्पर्धा से न केवल कृषि उत्पादन को

बढ़ावा मिला है अपितु उत्पादन प्रक्रिया भी सक्षम हुई है।

उत्तर28– उद्योगों की स्थापना स्वभावतः जटिल है। इनकी स्थापना कच्चे माल की उपलब्धता

से प्रभावित होती है। इन सभी कारकों का एक स्थान पर पाया जाना संभव नहीं है विनिर्माण उद्योग की स्थापना के लिए वही स्थान उपयुक्त है जहाँ ये कारक उपलब्ध हो अथवा जहाँ इन्हें कम कीमत पर उपलब्ध कराया जा सकता है।

औद्योगिक प्रक्रिया के प्रारंभ होने के साथ–साथ नगरीकरण प्रारंभ होता है। कभी–कभी उद्योग शहरों में या उनके निकट लगाए जाते हैं। औद्योगिक तथा नगरीकरण साथ–साथ चलते हैं। नगर उद्योगों को बाज़ार तथा सेवाएं जैसे – बैंकिंग, बीमा, परिवहन श्रमिक तथा वित्तीय सलाह आदि उपलब्ध कराते हैं। कई उद्योग नगरों के पास केंद्रित होने को समूहन बचत कहते हैं।

उत्तर 29 – आरंभिक वर्षों में सूती वस्त्र उद्योग महाराष्ट्र तथा गुजरात के कपास उत्पादन क्षेत्रों तक ही सीमित थे। कपास की उपलब्धता बाजार, परिवहन, पत्तनों की समीपता, आम नमीयुक्त जलवायु आदि के कारकों ने इसके स्थानयीकरण को बढ़ावा दिया। इस उद्योग का कृषि से निकट का संबंध है और कृषकों, कपास चुनने वालों, गाँठ बनाने वालों, कताई करने वालों, रंगाई करने वालों, डिज़ाइन बनाने वालों, पैकेट बनाने वालों और सिलाई करने वालों को यह जीविका प्रदान करता है।

उत्तर 30 – भारत में रसायन उद्योग तेजी से विकसित हो रहा तथा फैल रहा है। इसकी भागीदारी सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 3 प्रतिशत है। यह उद्योग एशिया का तीसरा बड़ा तथा विश्व में आकार की दृष्टि से 12वें स्थान पर है। इसमें लघु तथा बृहत दोनों प्रकार की विनिर्माण इकाइयाँ सम्मिलित हैं। अकार्बिनिक और कार्बनिक दोनों क्षेत्रों में तीव्र वृद्धि दर्ज की गई है।

उत्तर 31 – उद्योगों के असमान विकास के निम्नलिखित कारण हैं :–

1) उद्योगों की स्थापना जटिल है। इसके कच्चे माल की उपलब्धता, श्रमिक, पूँजी, शक्ति के साधन तथा बाज़ार आदि की उपलब्धता से प्रभावित होती है। इन सभी कारकों को एक स्थान पर पाया जाना लगभग असंभव है। फलस्वरूप विनिर्माण उद्योग की स्थापना के लिए वही स्थान उपयुक्त है जहाँ ये कारक उपलब्ध हों।

2) सरकार की गलत नीतियों के कारण से भी उद्योगों पर गलत प्रभाव पड़ता है।

उत्तर 32 – 1) इस उद्योग के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के उत्पाद व्यापक रूप से तैयार किए जाते हैं जैसे–ट्रांजिस्टर, टेलिविजन, टेलिफोन, सेल्युलर फोन, पेजर, कम्प्यूटर, टेलीफोन एक्सचेंज आदि।

2) यह उद्योग डाकघरों, तारघरों, रक्षा, रेलवे, बैंक, वायुपरिवहन और मौसम विभाग के लिए उनकी आवश्यकतानुसार अनेक प्रकार के उपकरण तैयार करता है।

3) संचार में लाखों लोग मोबाइल फोन का उपयोग कर रहे हैं।

4) सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग से 31 मार्च 2005 तक 10 लाख से ज्यादा को रोजगार मिला है।

5) यह उद्योग विदेशी मुद्रा कमाने वाला प्रमुख उद्योग है क्योंकि इससे बहुत बड़ी संख्या में लोगों को विदेशों में रोजगार मिल रहा है।

उत्तर 33 –कुटीर उद्योग लघु स्तर के उद्योग होते हैं जो ग्रामीण और कृषि आधारित जनसंख्या की आवश्यकताओं को पूरा करती है तथा रोजगार के स्रोत के रूप में अतिरिक्त आय का स्रोत भी उपलब्ध करवाती है। भारत की अधिकतर जनसंख्या ग्रामीण है तथा लघु उद्योगों में ही कार्यरत्त है। इसकी देश की अर्थवयवस्था और सकल घरेलू उत्पाद में महत्वपूर्ण भूमिका है।

अध्याय –7
राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की जीवन रेखाए

उत्तर 34 – (1) हमारे जीवन में कुछ वस्तुएं तथा सेवाएं जहाँ हमारे आस–पास ही उपलब्ध होती हैं। वहीं कुछ की पूर्ति दूसरे स्थानों से लाकर पूरी की जाती है। परिवहन के साधन मांग स्थल और आपूर्ति स्थल को आपस में जोड़ते हैं।

(2) देश में विकास की गति को वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के साथ–साथ उनके एक स्थान से दूसरे स्थान तक वहन की सुविधा पर भी निर्भर रहना पड़ता है।

(3) परिवहन के साधनों ने देश के अलग–अलग स्थानों के लोगों को आपस में जोड़कर राष्ट्रीय एकीकरण को बढ़ावा दिया है।

(4) देश के सीमांत क्षेत्रों की सुरक्षा भी इनकी उपलब्धता पर निर्भर है।

इन्हीं कारणों से परिवहन के साधनों को राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की जीवन रेखाएं माना जाता है।

उत्तर 35 – (1) देश के दूर–दराज़ के क्षेत्रों को मुख्य भाग से जोड़कर यह सड़कें राष्ट्रीय एकीकरण को बढ़ाती हैं। जैसे भारत में उत्तर–पूर्वी क्षेत्र।

(2) यह सड़कें सामरिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण होती हैं और देश में बाह्य आक्रमण एवं आंतरिक विद्रोह की स्थिति में इनकी उपयोगिता बढ़ जाती है।

(3) दुर्गम क्षेत्रों में अभिगम्यता बढ़ जाती है।

उत्तर 36 – संदेशों को प्राप्त करने एवं भेजने के कई साधनों का समयानुसार विकास होता रहा है। संचार सेवाओं में निजी दूरसंचार जैसे पत्र, मोबाईल तथा जनसंचार जैसे–दूरदर्शन, रेडियो, समाचार पत्र समूह, सिनेमा, इन्टरनेट आदि को शामिल किया जाता है। मानव जीवन के विकास में इसकी प्रमुख भूमिकाएं निम्नलिखित हैं–

(1) संदेश प्राप्तकर्त्ता या भेजनेवाले के लिए गतिहीन रहते हुए भी लंबी दूरी का संचार बहुत आसान हो गया है।

(2) जनसंचार मानव को मनोरंजन के साथ बहुत से राष्ट्रीय कार्यक्रमों व नीतियों के विषय में जागरूक करता है। इसमें रेडियों, टी.वी. समाचारपत्र, किताबें आदि शामिल हैं।

(3) सेवाओं के विकास ने राष्ट्रीय एकता को बढ़ाने में बल दिया है।

उत्तर 37 – तीर्थाटन, शिक्षा आदि के रूप में पर्यटन प्राचीन समय से ही मानव समाज में प्रचलित क्रिया रही है। परिवहन एवं संचार के साधनों के तीव्र विकास ने इसमें बहुत वृद्धि की है तथा इसके कई नए आयाम जैसे मेडिकल टूरिज़्म, विरासत पर्यटन, रोमांचकारी पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, व्यापारिक पर्यटन आदि प्रकट हुए हैं। इसके निम्नलिखित प्रभाव मानव समाज पर दिखाई देते हैं –

(1) पर्यटन राष्ट्रीय एकता को बढ़ाता है।

(2) स्थानीय हस्तकला एवं सांस्कृतिक उद्यमों को प्रश्रय देता है।

(3) अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न संस्कृतियों एवं विरासत के प्रति समझ बढ़ाकर संवेदनशील बनाता है।

(4) रोजगार सृजन का यह एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बन गया है।

उत्तर 38 – रेल परिवहन का महत्त्व निम्नलिखित कारणों से बढ़ता जा रहा है –

(1) यह परिवहन के अन्य साधनों के मुकाबले सस्ता और आरामदायक साधन है।

(2) एक साथ अधिक मात्रा में यात्री और माल की ढुलाई इसके द्वारा संभव है।

(3) इसकी गति सड़क परिवहन के मुकाबले तीव्र होने के कारण समय की बचत भी होती है।

(4) कम विकसित क्षेत्रों को उच्च विकसित क्षेत्रों से जोड़कर आर्थिक लाभों का वितरण करने में मदद करती है।

उत्तर 39 – (1) ठोस पदार्थों को तरल अवस्था में परिवर्तित करके ही भेजा जा सकता है जो

कई बार संभव नहीं होता।

(2) पाइपलाइन बिछाने में प्रारंभिक लागत बहुत आती है।

(3) इसका विकास अभी अल्पमात्रा में ही हो पाया है।

(4) दुर्गम और अशांत क्षेत्रों में इसकी सतत् सुरक्षा बहुत मुश्किल होती है।

उत्तर 40 – आज वायु परिवहन तीव्रतम, आरामदायक व प्रतिष्ठित परिवहन का साधन है।

इसकी देश के विकास में निम्नलिखित भूमिका है –

(1) इसके द्वारा अतिदुर्गम स्थानों जैसे – ऊँचे पर्वत, मरूस्थल, घने जंगलों व लम्बे समुद्री रास्तों का सुगमता से पार करना संभव हो पाया है। जो देश की सुरक्षा की दृष्टि से आवश्यक है।

(2) वायु परिवहन के अभाव में उत्तर पूर्वी राज्यों का क्षेत्र जो बड़ी नदियों, विच्छिन्न धरातल, घने जंगल, निरन्तर बाढ़ से ग्रसित है में आवागमन रूक जाएगा।

(3) अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में परस्पर जुड़ाव को इसने सरल बना दिया है।

राजनीति – विज्ञान

अध्याय – 5

जनसंघर्ष और आंदोलन

उत्तर 41 :–नेपाल के जन आंदोलन में निम्न मूल्यों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है :–

1) राजतंत्र के तानाशाही कार्यो के प्रति जनता में रोष

2) लोकतांत्रिक आकांक्षाएं।

3) इनकी पूर्ति हेतु जनभागीदारी युक्त आन्दोलन।

उत्तर 42 :—1) राजनैतिक दल जनता के प्रति जवाब देय है। दबाव समूह उन्हें यह याद दिलाते रहते हैं।

2) सरकार जनता के हितों की अनदेखी नहीं कर सकती। दबाव समूह उन पर दबाव डालते रहते हैं।

3) दबाव समूह निष्ठा पूर्वक कार्य करते हैं। उन पर चुनावी राजनीति का दबाव नहीं होता।

उत्तर 43 :— लोकतंत्र जनता के हित में कार्य करने वाली शासन प्रणाली है। समाज कई समूहों, वर्गों और उनकी आकांक्षाओं के जोड़ से बनता है। कई बार जनता के द्वारा चुनी गई सरकारें समाज के व्यापक हित में या वर्गों या समूहों के हितों में सामंजस्य नहीं बना पाती और उपेक्षा दिखाती हैं। चूंकि लोकतंत्र में जनता को अपनी बात कहने, विरोध प्रकट करने, आन्दोलन करने का संवैधानिक अधिकार प्राप्त होता है। अतः जनसंघर्ष और आन्दोलनों के द्वारा सरकार को व्यापक हित में कार्य करने के लिए मजबूर किया जाता है। उदाहरण के लिए बोलिविया में जल के निजीकरण के खिलाफ हुए संघर्ष ने सरकार को अपना निर्णय वापस लेने पर मज़बूर कर दिया। इस प्रकार जनसंघर्ष लोकतंत्र को परिपक्व करते हैं।

उत्तर 44 — समकालीन समय में ऐसे कई आन्दोलन हुए हैं जो हमारे जीवन से जुड़े महत्वपूर्ण आयामों जैसे पर्यावरण सुरक्षा, जीविका संकट, भ्रष्टाचार आदि से संबंधित रहे हैं। उनमें से कई आन्दोलन सफल भी हुए हैं और जनता में जागरूकता और भागीदारी के स्तर में इजाफा किया है। उदाहरण के लिए चिपको आन्दोलन ने पर्यावरण के संवर्द्धन के महत्व को उजागर किया तो नर्मदा बचाओं आन्दोलन ने बड़े बांधों के दुष्परिणामों, विस्थापन आदि मुद्धों को उठाया। इसी कड़ी में अन्ना हज़ारे द्वारा छेड़ा गया भ्रष्टाचार विरोधी आन्दोलन भी है जिसने लोकपाल की माँग को प्रमुख राजनीतिक मुद्दा बना दिया जिस पर अभी तक की सरकारें उदासीन रही हैं।

उत्तर 45 – ऐसे समूह जो किसी वर्ग विशेष के बजाय सामूहिक हित को बढ़ावा देना चाहते हैं, उन्हें जनहित समूह कहते हैं। इनकी गतिविधियाँ कई प्रकार से जनता के लोकतांत्रिक अधिकारों और व्यापक हितों की पहरेदारी करती हैं –

1) यह ऐसे समूहों या लोगों के अधिकारों के बारे में सरकार पर दबाव बनाती हैं जिन्हें अपने अधिकारों का ज्ञान नहीं होता या गरीबी और भेदभाव के शिकार होते हैं जैसे– असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों या बंधुआ मजदूरों की भलाई के लिए कार्य करने वाले समूह।

2) इनका उद्देश्य किसी खास हित के बजाय व्यापक सामूहिक हितों को बढ़ावा देकर लोक कल्याणकारी समूह के रूप में कार्य करना होता है। जैसे पर्यावरण संरक्षण।

3) इनके पीछे जनता के बड़े हिस्से का समर्थन होता है अतः सरकार इनकी बातों को गम्भीरता से सुनती है।

उत्तर 46 – लोकप्रिय संघर्ष जहाँ लोकतंत्र की स्थापना करने में अपनी भूमिका निभाते हैं वही लोकतांत्रिक सरकारों को जनता के हित में लगातार कार्य करते रहने के लिए मजबूर भी करते हैं। उदाहरण के लिए औपनिवेशिक तानाशाही सरकारों के खिलाफ उपनिवेशों में चले संघर्षों के बाद उन्हें आज़ादी मिली और लोकतांत्रिक देशों का गठन किया गया। उदाहरण के लिए – भारत, दक्षिण अफ्रीका आदि। कई बार जनता द्वारा चुनी गई सरकारें भी अलोकतांत्रिक फैसले लेने लगती हैं तथा व्यापक जनहित के मुद्धों की अपेक्षा करके किसी एक समूह या वर्ग के हिसाब से कार्य करने लगती हैं। लोकप्रिय संघर्षों के माध्यम से ऐसी सरकारों को ठीक रास्ते पर चलने के लिए मजबूर किया जा सकता है। उदाहरण के लिए बोलिविया सरकार ने बहुराष्ट्रीय कंपनियों के दबाव में आकर जल के निजिकरण का अलोकतांत्रिक फैसला लिया। जनता पर महंगाई का बड़ा बोझ पड़ने लगा। फेडेकोर नामक संगठन के नेतृत्व में वहाँ बड़ा आन्दोलन चलाया गया और सरकार को फैसला वापस लेने पर मजबूर किया गया। यह एक तरह से लोकतांत्रिक सरकार को लोकतांत्रिक मार्ग पर लाने जैसा कार्य था।

अध्याय – 6

राजनीतिक दल

उत्तर 47:– राजनैतिक दलों को निम्न चुनौतियों का सामना करना पड़ता है :–

1) विकल्पहीनता की कमी।
2) प्रभावी नेता की निर्णय शक्ति का अभाव।
3) धन और अपराधिक तत्वों की घुसपैठ।
4) वंशवाद को बढ़ावा।

उत्तर 48 :–आधुनिक लोकतंत्र राजनीतिक दलों के बिना नहीं चल सकता जिसके निम्न कारण हैं :–

1) जनता अपने प्रतिनिधियों का चुनाव स्वयं करती है।
2) राजनीतिक दलों के द्वारा चुनाव के समय में किये वायदों को पूरा करने का प्रयास।
3) राजनीतिक दलों के अभाव में देशहित में नीति निर्माण नहीं होगा।
4) दलों के ना होने से सभी प्रत्याशी स्वतंत्र होंगे। उनकी कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।

उत्तर 49 – भारत में बहुदलीय व्यवस्था का अस्तित्व है। भारत एक बहुत विशाल देश है जहां अनेक संस्कृति, धर्म, भाषा, प्रजाति आदि की विभिन्नताएं हैं। कोई एक दल इन सभी के हितों, आकांक्षाओं को व्यक्त करने, इसमें संतुलन बनाने में समर्थ नहीं हो पाता है। इन परिस्थितियों में यहां बहुदलीय व्यवस्था का जन्म हुआ है इसके दो लाभ निम्नलिखित हैं –

1) इस प्रणाली में विभिन्न हितों और विचारों को राजनीतिक प्रतिनिधित्व मिल जाता है।
2) विभिन्न उद्देश्यों तथा विचारों को प्रतिनिधित्व देने वाले लोग जब कोई गठबंधन या मिली–जुली सरकार बनाते हैं तो वे एक–दूसरे के साथ सांमजस्य बैठाना सीख जाते हैं।

उत्तर 50 – पिछले कुछ दशकों में क्षेत्रिय या राज्यस्तरीय दलों की संख्या में काफी इजाफा हुआ है। इन्होंने भारतीय लोकतंत्र और संघवाद को निम्नलिखित तरीके से मदद पहुँचाई है –

1) भारतीय संसद में राजनीतिक रूप से अधिक विविधता दिखाई देने लगी है जो विभिन्न क्षेत्रों और समूहों के वास्तविक प्रतिनिधित्व को दर्शाती है।
2) गठबंधन सरकारों के इस दौर में बिना क्षेत्रीय पार्टियों के समर्थन के राष्ट्रीय सरकार बनाना मुश्किल है।

3) क्षेत्रीय दलों ने राष्ट्रीय दलों की मनमानी, केन्द्रीय नियंत्रण की प्रवृत्ति के खिलाफ अवरोधीकारी एवं संतुलनकारी भूमिका निभाई है।
4) अब क्षेत्रीय हितों एवं मुद्दों को राष्ट्रीय स्तर पर अधिक महत्व दिया जाने लगा है। जो लोकतंत्र और संघवाद दोनों की मजबूती के लिए जरूरी है।

उत्तर 51 – एक नागरिक के रूप में मत देते समय मैं एक राजनीतिक दल में निम्नलिखित गुणों को चाहूंगा :–
1) उस दल में आन्तरिक लोकतंत्र के तत्व हैं कि नहीं। यानि फैसले लेते समय किसी एक ही नेता का वर्चस्व रहता है या सामूहिक निर्णय लिए जाते हैं।
2) उस दल का लोकतांत्रिक मूल्यों जैसे समानता, स्वतन्त्रता, सामाजिक न्याय, धर्मनिरपेक्षता के प्रति दृष्टिकोण।
3) चुनाव के समय उम्मीदवारों द्वारा किए गए वायदे।

उत्तर 52 – आधुनिक समय में प्रतिनिधि लोकतंत्र शासन की उत्तम प्रणाली मानी जाती है। यह राजनीतिक दलों द्वारा ही संभव हो पाता है। चुनाव लड़ने, सरकार बनाने, विरोधी दल की भूमिका निभाने, अपनी विचार धारा एवं उद्देश्यों के प्रति जनता को जागरूक करने, जनता और सरकार के बीच कड़ी का कार्य करने जैसे महत्वपूर्ण कार्य राजनीतिक दलों द्वारा ही सम्पन्न किए जाते हैं। किन्तु राजनीतिक दलों में कई कमियां होने के कारण लोकतंत्र सही ढंग से नहीं चल पाता है, वंशानुगत दबदबा, महिलाओं, दलितों आदि की कमजोर उपस्थिति, धन–बल के बढ़ते महत्व, सार्थक विकल्पों की कमी ने लोकतंत्र को प्रभावित किया है। अगर यह कमियां दूर होती है तो लोकतंत्र ज्यादा जवाबदेह, प्रतिनिधिमूलक और न्यायसंगत बन सकेगा। अतः दलों की कमियाँ दूर करना आवश्यक है।

अध्याय – 7
लोकतंत्र के परिणाम

उत्तर 53 :–स्वस्थ समाज के निर्माण में लोकतंत्र की प्रक्रिया निम्न आधार पर सहायक सिद्ध हो सकती है :–
1) कुशल नेतृत्व, 2) नेताओं द्वारा जनहित कार्य, 3) देशहित और विकास की सोच, 4) पड़ोस से अच्छे संबंध स्थापित करना, 5) विश्व शांति व सुरक्षा की भावना का विकास।

उत्तर 54 :–

तानाशाही	**लोकतंत्र**
1) असंवैधानिक	1) संवैधानिक
2) व्यक्तिगत लाभ	2) समाज अथवा देष हित
3) वंशानुगत	3) चुनी हुई सरकार
4) शीघ्र निर्णय	4) निर्णय में भागीदारी
5) जवाबदेही नहीं	5) जनता को जवाबदेही।

उत्तर 55 :–निम्न बातों के आधार पर लोकतंत्र नागरिकों की गरिमा और आज़ादी को कायम रखने में सफल हुआ है :–

1) स्थानीय सरकारों में 33 प्रतिशत पद महिलाओं के लिए आरक्षित।
2) महिलाओं को लम्बे संघर्ष के बाद समानता का व्यवहार मिला।
3) उच्च राष्ट्रीय चरित्र निर्माण में सहायक।
4) बौद्धिक विकास में सहायक।

उत्तर 56 :–लोकतंत्र ने नागरिकों के जीवन में प्रेम और सद्भाव की व्यवस्था निम्न अधिकारों को प्रदान करके की है :–

1) सामाजिक स्वतंत्रता।
2) धार्मिक स्वतंत्रता।
3) बोलने की स्वतंत्रता व सभा करने की स्वतंत्रता और संगठन बनाने का अधिकार।
4) जानने का अधिकार।
5) पारदर्शिता।

उत्तर 57 :–1) राजनीतिक और आर्थिक समानता को दर्शाने वाले कानून बनाए जाएँ।
2) एक व्यक्ति एक वोट।
3) मनरेगा का उचित क्रियान्वयन।
4) कल्याणकारी कार्यक्रमों का क्रियान्वयन।

उत्तर 58 :–भारतीय लोकतंत्र को मज़बूत बनाने के लिए सुझाव निम्न प्रकार हैं :–

1) राजनीतिक दलों में आंतरिक लोकतंत्र लाने के लिए कानूनी सुधार।
2) जनता को जागरूक व शिक्षित किया जाए।
3) कमज़ोर तबकों को आगे बढ़ाने के लिए और सार्थक प्रयास किए जाएँ।
4) अयोग्य व अपराधिक प्रवृति के उम्मीदवारों को चुनाव में खड़े होने पर रोक

लगाई जाए आदि।

उत्तर 59 :–लोकतंत्र परस्पर समानता, न्याय, स्वतंत्रता में भागीदारी जैसे मूल्यों के आधार पर कार्य करता है, जो व्यक्तियों के मध्य एक–दूसरे के प्रति सम्मान एवं प्रेम को बढ़ावा देते हुए उनकी गरिमा एवं स्वतंत्रता को बढ़ाती है। इसे निम्नलिखित लोकतांत्रिक प्रावधानों के द्वारा संपन्न किया जाता है –

1) एक व्यक्ति एक वोट पर आधारित सार्वभौमिक व्यस्क मताधिकार प्रणाली।
2) निर्णयों और नीतियों में व्यापक भागीदारी और बहस।
3) कमज़ोर तबकों को आगे बढ़ाने के लिए कल्याणकारी कार्यों को करना आदि।

भारत में महिलाओं, निम्नजातियों, पिछड़ों के उत्थान के लिए न केवल कानूनी समानता का प्रावधान किया गया है बल्कि इन्हें आगे बढ़ाने के लिए उचित अवसर उपलब्ध करवाने का प्रयास भी किया जाता है।

उत्तर 60 :–लोकतांत्रिक प्रक्रिया में व्यापक भागीदारी, समानता, जनकल्याण, प्रतिनिधित्व जैसे मूल्यों को आधार माना जाता है। लोकतांत्रिक प्रक्रिया कई तरह से समाज का भला करती है :–

1) कुशल नेतृत्व के आगे आने की संभावना बढ़ जाती है।
2) यह महिलाओं, दलितों, गरीबों के प्रतिनिधित्व को बढ़ाकर उनकी आवाज़ को महत्व देती है।
3) तार्किक फैसलों की संभावना रहती है।
4) लोकतांत्रिक प्रक्रिया विश्वशांति और सुरक्षा को बढ़ावा देती है।

अध्याय – 8
लोकतंत्र की चुनौतियाँ

उत्तर 61 :–लोकतंत्रात्मक सरकार में चुनौतियाँ पैदा होने के कारण निम्न हैं :–

1) अयोग्य व अशिक्षित उम्मीदवारों का चयनित होना, 2) जनता की उदासीनता, 3) व्यापक गरीबी, 4) बढ़ता भ्रष्टाचार, 5) कुशल नेतृत्व का अभाव, 6) भेदभाव, 7) असमानता।

उत्तर 62 :–राजनीतिक सुधारों की आवश्यकताओं के लिए निम्न कदम उठाने की आवश्यकता है :–

योग्य उम्मीदवार का चयन करना, राष्ट्रहित सर्वोपरि मानना, शिक्षित उम्मीदवारों

की भागीदारी होना, सरकार के कार्यों में पारदर्शिता होना, उच्च चरित्र निर्माण, जागरूक नागरिक।

उत्तर 63 :–लोकतंत्र को चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जिसके कई कारण हैं :–

1) लोकतांत्रिक संस्थाओं की कार्यदशा ठीक न होना।
2) जनता में जागरुकता और भागीदारी का स्तर ठीक न होना।
3) राजनीतिक दलों द्वारा अलोकतांत्रिक तरीके से राजनीति करना।
4) समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, असमानता आदि।

उत्तर 64 :–जनता लोकतंत्र को मज़बूत बनाने के लिए कई तरीकों से योगदान कर सकती

है:–

1) चुनावों में योग्य उम्मीदवारों का चयन करना।
2) आंदोलनों, विरोधों के द्वारा सरकार को अलोकतांत्रिक फैसले लेने से रोकना।
3) राजनीतिक दलों की गलत नीतियों और बहकावे में न आना।
4) एक–दूसरे को जागरूक करना।

उत्तर 65 :–संविधान में संशोधन करके लोकतंत्र को विस्तार देते हुए स्थानीय स्तर पर चुनी हुई सरकारों का प्रावधान 1993 में किया गया। इन्हें कई अधिकार भी दिए गए तथा दलितों, महिलाओं की उचित हिस्सेदारी के लिए आरक्षण का प्रावधान किया गया। किंतु यह अभी भी प्रभावी तरीके से कार्य नहीं कर पा रही है। यह लोकतंत्र को मज़बूत बनाने की चुनौती को दर्शाती है। इसे निम्नलिखित तरीके से दूर किया जा सकता है –

1) लोकतांत्रिक संस्थाओं को मज़बूत बनाकर और अधिक शक्ति प्रदान करके।
2) लोगों को जागरूक बनाकर।
3) कानूनी प्रावधानों का उचित क्रियान्वयन करके। जैसे महिला आरक्षित सीटों पर महिलाएँ चुनी तो जाती हैं पर कार्य पति के द्वारा किया जाता है, जो गलत है। आदि।

अर्थशास्त्र

अध्याय – 3
मुद्रा और साख

उत्तर 66 – ऋण के औपचारिक क्षेत्र जैसे बैंक आदि ऋण देने के लिए कई शर्तें रखते है जैसे रोजगार

की स्थाई प्रकृति, निश्चित वेतन संबंधी दस्तावेजों की मांग आदि। ग्रामीणों,गरीबों और अशिक्षित समूहों के पास इसकी अनुपलब्धता रहती है इसीलिए वे ऊँची ब्याज दर पर आधारित किन्तु अपने आस–पास सुलभ अनौपचारिक क्षेत्रों से ऋण लेने पर मज़बूर हो जाते हैं। यह उनके शोषण को कई तरीके से बढ़ाती है–

(1) ऊँची ब्याज की दर देनी पड़ती है।
(2) कर्जदार ऋण के जाल में फंसता चला जाता है।
(3) कई बार ऋणदाता अनैतिक तरीके से इन्हें परेशान करने लगते हैं तथा उनकी संपत्ति पर कब्जा जमा लेते हैं।

उत्तर 67 – जहाँ मुद्रा का उपयोग किए बिना वस्तुओं का विनिमय होता है वहाँ आवश्यकताओं का दोहरा

संयोग होना अनिवार्य होता है। इसमें उस स्थिति में पहुंचना होता है जहाँ दोनों पक्ष एक–दूसरे से चीजें खरीदने पर सहमति रखते हो। जैसे एक जूता निर्माता का बिना मुद्रा के इस्तेमाल किए सीधे गेहूँ उगाने वाले ऐसे किसान की जरूरत होगी जो न केवल गेहूँ बेचना चाहता हो, बल्कि साथ में जूते खरीदना भी चाहता हों। परंपरागत और आर्थिक रूप से सरल एवं पिछड़े समाजों में वस्तु–विनिमय प्रणाली की यही व्यवस्था काम करती है। किन्तु जटिल और आधुनिक विकसित समाज में यह एक रूकावट का कार्य करेगी अतः मुद्रा मध्यवर्ती भूमिका प्रदान करके आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की जरूरत को न केवल समाप्त करती है बल्कि तीव्र एवं सरल विनिमिय को संभव बनाती है।

उत्तर 68 – ऐसे लोग जिनके पास आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद अतिरिक्त आय बच जाती है वे अपने

इस अतिरिक्त धन को बैंकों में जमा कर देते हैं। इसका उन्हें लाभ मिलता है। बैंक अपनी जमा राशि का कुछ प्रतिशत अपने पास नगद के रूप में हमेशा रखते हैं जो जमाकर्त्ताओं द्वारा एक दिन में धन निकालने की संभावना पर आधारित होता है। जैसे भारत में बैंक 15 प्रतिशत हिस्सा नगद के रूप में रखते हैं। बाकी जमाराशि का बड़ा हिस्सा ऋण देने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। विभिन्न आर्थिक गतिविधियों के लिए ऋण की मांग रहती है। यह समय पर कर्जदारों की मदद करती है जैसे – गृह लोन लेना। इसके साथ ही जमा राशि पर जो ब्याज देती है उसे कहीं अधिक दर पर कर्ज देती है जो उसके आय का स्त्रोत होता है। इस प्रकार जमाकर्त्ता और कर्जदार दोनों के हित में बैंक की सकारात्मक भूमिका रहती है।

उत्तर 69 – **उदाहरण** – छोटे किसान स्वपना ने अपनी 3 एकड़ ज़मीन पर मूँगफली उगाने के लिए खेती

के खर्चे हेतु साहूकार से ऋण लिया। उसने सोचा था कि फसल तैयार होने पर वह कर्ज़ अदा

करेगी। किन्तु कीटों के हमले से फसल बर्बाद हो जाती है तथा वह साहूकार का कर्ज़ लौटाने

में असफल रहती है। साल भर में ब्याज़ जुड़कर वह कर्ज़ बड़ी रकम बन जाती है। अगले साल

वह फिर कर्ज़ लेती है। इस साल अच्छी फसल के बावजूद इतनी कमाई नहीं होती कि वह अपना कर्ज़ वापस कर सके। उसे कर्ज़ वापस चुकाने के लिए ज़मीन का कुछ हिस्सा बेचना पड़ता है। इस प्रकार कर्ज़ के जाल में फंसकर उसकी स्थिति पहले से बदतर हो जाती है। उदाहरण से स्पष्ट है कि सपना की आय अनिश्चित प्रकृति की थी। एक बार आय कम होने पर कर्ज़ बढ़ता ही चला जाता है और उसकी पूर्ति कठिन हो जाती है।

उत्तर 70 :– (1) महिलाओं को आर्थिक सहायता।
(2) ब्याज़ में कमी।
(3) गरीबों का संगठन।
(4) सामाजिक विषयों के बारे में जानकारी।

उत्तर 71 :– (1) ब्याज़ की दर।
(2) भुगतान की शर्तें।
(3) ऋणधार (गिरवी) ।

उत्तर 72 :– (1) नकद (कैश) साथ ले जाना जोखिम भरा है।
(2) चैक से भुगतान सरल है।
(3) चैक साथ ले जाना सुविधाजनक है।

उत्तर 73 :– (1) जमाराशि के बड़े भाग को ऋण देने के लिए उपयोग करते हैं।
(2) किसान को कम ब्याज पर ऋण देते हैं।
(3) जमाकर्त्ता को ब्याज़ देते हैं।

अध्याय – 4
वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था

उत्तर 74 – (1) बहुव्यापी विकल्पों का बढ़ना।
(2) प्रतिस्पर्द्धा में वृद्धि और गुणवत्ता में सुधार
(3) विज्ञापनों का व्यापक प्रसार आदि।

उत्तर 75 – विश्व व्यापार संगठन (WTO) एक ऐसा संगठन है जिसका ध्येय अन्तर्राष्ट्रीय

व्यापार को उदार बनाना तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से संबंधित नियमों को निर्धारित करना और उनका पालन करवाना है। यद्यपि यह सभी देशों को मुक्त व्यापार की सुविधा देता है किन्तु विकसित देशों ने अभी भी व्यापार अवरोधों को

बरकरार रखा है जैसे कृषि उत्पादों के व्यापार पर विकसित देश अपने किसानों को व्यापक सब्सिडी देते हैं। इसका दूसरा पक्ष यह भी है कि समान व्यापार की शर्तें होने के बावजूद विकासशील देशों में प्रौद्योगिकी व पूंजी के अभाव के कारण प्रतिस्पर्द्धा में वह पिछड़ जाते हैं। जो अंत में विकासशील देशों के नुकसानदेह और विकसित देशों के फायदे में रहता है।
महत्वपूर्ण फैसलों में विकसित देश विकासशील देशों पर तरह–तरह के दबाव बनाकर अपने पक्ष में फैसले करवा लेते हैं।

उत्तर 76 – आज के समय में वैश्वीकरण एक सच्चाई है। किन्तु शिक्षित, कुशल और संपन्न

लोगों ने इससे मिले नए अवसरों का सर्वोत्तम उपयोग किया है। दूसरी ओर अनेक लोगों जैसे ग्रामीणों, मजदूरों, अशिक्षितों आदि को इस लाभ में हिस्सा नहीं मिला है। वैश्वीकरण को अधिक न्यायसंगत बनाने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जाने चाहिए–

(1) सरकार द्वारा यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि श्रमिक कानूनों का उचित क्रियान्वयन हो और श्रमिक को अपने जायज अधिकार मिले।

(2) छोटे उत्पादकों को कार्य निष्पादन में सुधार हेतु सरकारी मदद एवं प्रोत्साहन मिले

जिससे वह प्रतिस्पर्द्धा में बने रहें।

(3) विश्व व्यापार संगठन में विकसित देशों के वर्चस्व के विरूद्ध समान हित वाले विकासशील देश मिलकर लड़ाई लड़ें।

(4) उद्योगों या अन्य विकास कार्यों के लिए अधिग्रहित की जाने वाली जमीनों के बदले

न्यायसंगत मुआवज़ा मिले। आदि।

उत्तर 77 – (1) उपभोक्ताओं के पास उचित और व्यापक विकल्प।
(2) गुणवत्ता में वृद्धि
(3) रोज़गार के नए अवसरों में वृद्धि
(4) प्रतिस्पर्द्धी मूल्यों पर वस्तुओं व सेवाओं की उपलब्धता

उत्तर 78 :–आधुनिक संसाधनों की असमान उपलब्धता, असमान वितरण, सूचना एवं संचार प्रौद्यौगिकी पर एकाधिकार होने से विज्ञापनों एवं प्रचार द्वारा भ्रम फैलाना।

उत्तर 79 :–कानूनों का पालन, श्रमिकों को अधिकार, छोटे उत्पादकों में सुधार के लिए सरकार की मदद से संगठन बनाना।

उत्तर 80:– सूचना एवं संचार की प्रगति, परिवहन की तीव्र प्रगति, कम्प्यूटर, इंटरनेट, टेलिफोन, फैक्स आदि।

उत्तर 81:– **रोक क्यों लगी :–** उत्पादकों की सुरक्षा, उद्योगों के तीव्र विकास के लिए।

प्रतिबंध क्यों हटा :– उत्पादकों के प्रदर्शन में सुधार, गुणवत्ता में सुधार, अच्छी तकनीक का प्रयोग, रोज़गार के अवसर, सस्ता सामान।

उत्तर 82 :–नजदीकियां बढ़ेंगी, विदेशी व्यापार में वृद्धि, प्रौद्योगिकी का विकास, गुणवत्ता में सुधार, मूल्यों में कमी, उत्पादकों में प्रतिस्पर्धा।

पाठ–5
उपभोक्ता अधिकार

उत्तर 83 – यह कानून निम्नलिखित अधिकारों को उपभोक्ताओं को देकर सशक्त बनाता है
(1) जारूकता , (2) उचित मापतौल, (3) आई.एस.आई. मार्क,
(4) उपभोग की तिथि चैक करना, (5) अधिकतम खुदरा मूल्य (MRP)

उत्तर 84 – (1) घटिया किस्म का समान, (2) अधिक मूल्य, (3) कम माप करना, (4) नकली वस्तु, (5) मिलावटी वस्तु, (6) बुरा व्यवहार, (7) विज्ञापनों द्वारा लुभाना ।

उत्तर 85 – (1) जब उत्पादक वस्तुओं व सेवाओं को खरीदता है तो उत्पादक को वस्तु के बारे में पूरी सूचना देना, जैसे – मूल्य, बेचने व बनाने की तारीख आदि।
(2) खराब होने की तारीख, वस्तुओं के अवयवों आदि की सूचना देनी होगी।
(3) सूचना न होने पर उपभोक्ता शिकायत कर सकता है। वस्तु बदल सकता है
या अगर उत्पादन दोषपूर्ण हो तो क्षतिपूर्ति ले सकता है।

उत्तर 86 – **अधिकार** – सुरक्षा का, सूचना का, चुनने का, सुनवाई का, क्षतिपूर्ति का, उपभोक्ता जागरूकता का, शिक्षा का।

कर्त्तव्य – गुण के बारे में देखना, वस्तु के साथ गारन्टी कार्ड भी लेना चाहिए, रसीद
लेनी चाहिए, आई.एस.आई, एगमार्क का शब्दचिन्ह देखना।

यदि हम कर्त्तव्य पालन करेंगे और जागरूक होंगे तो अधिकारों की प्राप्ति में रूकावटें

नहीं आएंगी।

उत्तर 87 – (1) कोपरा कानूनों को लागू न्यायालय करता है।

(2) उपभोक्ता अदालतों का चलन ही कार्यवाही मीडिया द्वारा प्रसारण से और भी जागरूक होते हैं।

(3) दस्तावेज़, बिल होने चाहिएं जो जानकारी देते हैं।